P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-5* August - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन

# Study of The Impact of Teaching Efficiency and Achievement Motivation of Secondary Level Teacher Trainees

Paper Submission: 14/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

**ज्योति गौतम**
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
केरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

**अनामिका राठौर**
शोध पर्यवेक्षक,
प्राचार्या,
चिल्ड्रन टी.टी. कॉलेज,
कोटा, राजस्थान, भारत

**सारांश**

इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा का क्षेत्रगत व लिंग के आधार पर अध्ययन करना था। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया व कोटा जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के 20 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 480 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्षेत्र के आधार पर अन्तर होता है तथा महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा के परिणामों में भी अन्तर प्राप्त हुआ।

The purpose of this study was to study the teaching efficiency and achievement motivation of secondary level teacher trainees on the basis of region and gender. Survey method was used in this and 480 trainees from 20 teacher training colleges in rural and urban areas of Kota district were selected. After the study, the findings were found that there is a difference in teaching efficiency and achievement motivation on the basis of region and the results of teaching efficiency and achievement motivation of women and male teachers were also found.

**मुख्य शब्द :** शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा।
Teaching efficiency and achievement motivation.

**प्रस्तावना**

''शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है और शिक्षा मानव जीवन के विकास की आधारशिला है। शिक्षा मनुष्य की एक विशेष उपलब्धि है। मनुष्य जन्म लेने के बाद से मृत्यु के समय तक अपनी आत्म–चेतना तथा अनुभूति क्षमता के कारण जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के साथ अनुकूल–समायोजन तथा व्यावसायीकरण करना चाहता है।''

मनुष्य विभिन्न प्रकार के अनुभव तथा अनुभवों से समझदारी एवं ज्ञान प्राप्ति ही नहीं करता, वरन् उनका सोद्देश्य संचय भी करता है। ऐसी उपलब्धि मानव द्वारा उसकी शैक्षिक आकांक्षा से ही संभव है और मनुष्य आजीवन उसे धारणा करने की क्षमता रखता है। शिक्षा स्वयं में एक विश्व है तथा विशाल विश्व का प्रतिबिम्ब भी है। अपने उद्देश्यों में वह योगदान करते हुए समाज के अधीन होते हैं और विशेष रूप से वह यह सुनिश्चित करती है कि मानव संसाधनों का अपेक्षित विकास हो तथा मानव को अपनी उत्पादक शक्तियों को जुटाने में सहायता पहुँचाती है, जिससे समाज की आर्थिक स्थिति में विकास हो। शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान करती है। इस योगदान के बावजूद शिक्षा का समाज पर पड़ने वाला प्रभाव मुख्य न मानकर गौण माना जाता है।

**साहित्यावलोकन**

वसन शर्मा एवं पी.के. (2014) ने टीचिंग कॉम्पीटेन्स एण्ड टीचिंग स्टाइल ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों की शिक्षण शैली एवं शिक्षण दक्षता के बीच सम्बन्ध की जाँच करना था तथा निष्कर्ष निकाला कि महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण

शैली में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व शिक्षकों की शिक्षण दक्षता व शैली के मध्य धनात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

सुनीता मिश्रा एवं संजना यादव (2014) ने वित्त पोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत व बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की उच्च व निम्न शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सैनी, धनवीर (2007) ने ''उच्च व निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' कर निष्कर्ष में पाया कि छात्र व छात्राओं में क्रोध के साथ शैक्षिक उपलब्धि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य किसी प्रकार का सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया।

जेम्स एवं मैरिस (2004) ने अपने अध्ययन में विज्ञान उपलब्धि, विज्ञान अभिवृत्ति तथा विज्ञान अभियोग्यता के संबंध को उजागर किया। निष्कर्ष बताते हैं कि विज्ञान उपलब्धि और विज्ञान अभिवृत्ति में सकारात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि विज्ञान उपलब्धि और विज्ञान अभियोग्यता में सार्थक संबंध नहीं होता है।

शर्मा (2006), ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षण दक्षता में संबंध का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि बी.एड. कार्यक्रम में शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध पाया गया।

उषा कुमारी (2009), ने अपने अध्ययन में शिक्षक शिक्षा में, शिक्षण में अभिक्षमता व उनकी उपलब्धि के मध्य संबंध के महत्व को बताया।

**समस्या कथन**

माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा की तुलना करना।

**परिकल्पना**

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता व उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

**परिसीमन**

प्रस्तुत अध्ययन कोटा जिले के महाविद्यालय कोटा से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय तक सीमित था।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत शोध में कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय है। कुल जनसंख्या लगभग 7000 है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। इस हेतु प्रथम स्तर पर 10 शहरी व 10 ग्रामीण कुल 20 महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन व्यवस्थित न्यादर्श विधि से किया गया है। द्वितीय स्तर पर 480 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन की पुनः व्यवस्थित न्यादर्शन विधि से किया गया है।

**उपकरण**

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. शिक्षण दक्षता के मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत उपकरण की विश्वसनीयता 0.80 है।
2. उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डॉ. वी.पी. भार्गव द्वारा निर्मित 'उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी' का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता 0.80 है।

**प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम**

सम्पूर्ण न्यादर्श से प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन व्याख्या एवं परिणाम निम्नलिखित हैं –

**सारणी – 1**

**माध्यमिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्षेत्रीय आधार पर सांख्यिकीय स्थिति**

| शिक्षक प्रशिक्षणार्थी | ग्रामीण (240) | | शहरी (240) | | क्रान्तिक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी–मूल्य |
| शिक्षण दक्षता | 90.30 | 13.98 | 94.77 | 15.65 | 3.291 |
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 20.96 | 6.37 | 23.98 | 5.08 | 5.733 |

उपर्युक्त सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान क्रमशः 90.33 व 94.77 है तथा टी–मूल्य 3. 291 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणीयन मान 2.59

से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। चूँकि शहरी प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता अधिक होती है।

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान क्रमशः 20.96 व 23.98 है तथा टी–मूल्य 5.733 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर होता है। चूँकि शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणाार्थियों का मध्यमान, ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा अच्छी होती है।

**सारणी–2**

**''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्षेत्र व लिंग के आधार पर सांख्यिकीय स्थिति''**

| शिक्षक प्रशिक्षणार्थी | ग्रामीण (240) | | | | | शहरी (240) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | महिला | | पुरुष | | क्रान्तिक अनुपात (टी–मूल्य) | महिला | | पुरुष | | क्रान्तिक अनुपात (टी–मूल्य) |
| | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मध्यमान | प्रमाप विचलन | | मध्यमान | प्रमाप विचलन | मध्यमान | प्रमाप विचलन | |
| शिक्षण दक्षता | 92.45 | 13.72 | 88.17 | 13.96 | 2.392 | 97.79 | 16.23 | 91.75 | 14.50 | 3.041 |
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 22.03 | 7.81 | 19.88 | 4.28 | 2.646 | 24.86 | 5.33 | 23.09 | 4.68 | 2.729 |

सारणी–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान क्रमशः 92.45 व 88.17 हैं व इनका टी–मूल्य 2.392 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण महिला व पुरुषों की शिक्षण दक्षता में अन्तर होता है। ग्रामीण महिला, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक दक्षता रखती हैं।

सारणी–2 के अवलोकन से शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान क्रमशः 97.79 व 91.75 है व इनका टी–मूल्य 3.041 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 के सारणी मान क्रमशः 1.97 व 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर होता है। शहरी महिला, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक शिक्षण दक्षता रखती हैं।

सारणी–2 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान क्रमशः 22.03 व 19.88 है व इनका टी–मूल्य 2.646 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 के सारणी मान क्रमशः 1.97 व 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर पाया गया है। ग्रामीण महिला, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक उपलब्धि अभिप्रेरणा रखती हैं।

सारणी–2 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि शहरी महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमान क्रमशः 24.86 व 23.09 है तथा टी–मूल्य 2.729 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 के सारणी मान क्रमशः 1.97 व 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी महिला व पुरुषों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर पाया गया है। ग्रामीण महिला, पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक उपलब्धि अभिप्रेरणा रखती है।

**निष्कर्ष**

शोध के उपरान्त पाया गया कि –

1. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम पायी गयी।
2. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से कम प्राप्त हुई है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में अन्तर प्राप्त हुआ।
4. ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर प्राप्त हुआ।
5. शहरी क्षेत्र के महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता शहरी क्षेत्र के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।

6. शहरी क्षेत्र के महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा शहरी क्षेत्र के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम पायी गयी।

**अंत टिप्पणी**

1. *मैकेन्जी उद्धृत रमनबिहारी लाल (शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त)।*
2. *वसन शर्मा एवं पी.के. (2014), ''टीचिंग कॉम्पीटेन्स एण्ड टीचिंग स्टाइल ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स पर अध्ययन''।*
3. *मिश्रा सुनीता एवं यादव संजना (2014), ''इम्पेक्ट ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड ऑन टीचिंग कॉम्पीटेन्सी ऑफ बी.एड. ट्रेनिंग स्टडिंग इन एडेड एण्ड नॉन एडेड कॉलिजेज'', परिप्रेक्ष्य अंक – 2.*
4. *सिंह, जनक (2017), ''इम्पेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन टीचर एज्यूकेटर्स इफेक्टीनेस'', आई जे.ए.आर.आई.आई.ई., वॉल्यूम–3, इश्यू–4, पी.पी. 2333–2347.*
5. *जेम्स एवं मैरिस (2004), यथोद्धृत रिचा शुक्ला (2004), ए स्टडी इन्टू द रिलेशनशिप बिटविन साइंटिफिक, टेम्परमेंट एण्ड एचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेण्ट्स इन साइंस एट स्कूल लेवल'', लघुशोध प्रबन्ध वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, पृ.स. 27*
6. *शर्मा, आर.ए. (2006), ''अध्यापक शिक्षा प्रणाली'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।*
7. *उषा कुमारी (2009), शास्त्री, के.एन., ''अध्यापक शिक्षा'', प्रेरणा प्रकाशन, नई दिल्ली।*
8. *Educational Quest: 2(3), December 2011, page no. 317-322.*